आफत की होली

या

राष्ट्रीय फाग

प्रकाशक:—

हिन्दी पुस्तक भंडार,

२५, श्री रामरोड, लखनऊ।

मू० =)

"वन्देमातरम्"

महत्मा गांधी की
स्वदेशी होली

लेखक—

"विनोद"

Mahātmā Gandhī kī Svadeśī holī Vinoda

प्रकाशकः—

हिन्दी पुस्तक भंडार,

२५, श्रीराम रोड, लखनऊ।

इस पुस्तक को छः पैसे से ज्यादा पर कोई न बेंचे।
इसको न मानने पर कौमी अदालत में
मामला दे दिया जायगा।

प्रथम वार ३००० | सं० १९७८ वि० सन् १९२२ ई० | मूल्य -)॥ छः पैसा

बाबू चन्द्रमोहनदयाल मैनेजर द्वारा
ऐंग्लो-अरबिक प्रेस, माल रोड, लखनऊ में मुद्रित।

म० गान्धी की स्वदेशी होली ।

होली नं० १

अब तो छोड़ों विदेशी वाना ।

इसने ही भारत के सारे खाली किये खजाना ।
इससे मोती पन्ना हीरा यहँ से सकल विलाना ॥ १ ॥
पाँच सेर रुई लै रुपये की करैं देशाडर लदाना ।
ओटि आटि फिर गाँठ बँधाकर करै विदेश रवाना ॥ २ ॥
ओटे हुए बिनौलों को तो फिर बाजारन बिकवाना ।
मज़दूरन की मज़दूरी का इससे करै चुकाना ॥ ३ ॥
विदेशी मीलन में बहुतक तो तानें जावैं ताना ।
पौने चार सेर की रुई में पाँच बनावैं थाना ॥ ४ ॥
फिर एक रुपया के बदले वें हमसे लेंय पचास का दाना ।
इस ही से भारत में अब तो हुआ दरिद्र का आना ॥ ५ ॥
रवीद्रनाथ जी एक समय में गये थे जब जापाना ।
गुलाम जाति के यह वंशज हैं सुनैं न कोई व्याख्याना ॥ ६ ॥
काले, हीदन इन शब्दों से होता कहिं अपमाना ।
इससे विदेशी कपड़ा छोड़ो जो होवो तुम दाना ॥ ७ ॥
भारत के तुम सकल बजाजो एका करो महाना ।
माल विदेशी को न मँगाकर रखो देश के प्राना ॥ ८ ॥
वस्त्र विदेशी के रोकन हित हो सर्वत्र * जुटाना ।
जा हुकुम न कांग्रेस का तो धरना बैठाना ॥ ९ ॥

जो कलंक तुम पर है लागा उसको चहो मिटाना।
देश हेतके काम में तुमको होंगे दुःख उठाना ॥ १० ॥
इसपर चहिये सबको यहँपर आन्दोलन मचवाना।
माल विदेशी का लागै नहिं देश में कहूँ ठिकाना ॥ ११ ॥
हिन्दुस्तान के कपड़े पै तो भारी टिकस लगाना।
देशी कारबार कपड़ों का इससे सभी नशाना ॥ १२ ॥
नन्दकुमार देवने इनके छल को था पहिचाना।
करूँ जुलाहों की मैं रक्षा उसने तब था ठाना ॥ १३ ॥
फटना चहै कपट का पर्दा इनने जब यह जाना।
राज द्रोह का दोष लगा कर फाँसी उसे दिलाना ॥ १४ ॥
गाय सुअर की हड्डिन को फिर अति महीन बुकवाना।
इसका कलप लगे कपड़े में सुनलो चतुर सुजाना ॥ १५ ॥
तासे इसको लेव न कोई चहो जो धर्म बचाना।
पाप होय इससे वड़ भारी देश होय बीराना ॥ १६ ॥
देश भक्त भारत के जोहों उनको यह समझाना।
मूर्ख स्वार्थी देशरिपुन को नहि उपदेश सुनाना ॥ १७ ॥
कहैं बिनोद चेत अब जाओ चहु स्वराज जो पाना।
तौ फिर छोड़ि बिदेशी कपड़े देशी ही अपनाना ॥ १८ ॥

अररररर कबीर।

चालाकी से भरी है, यह गोरी सरकार।
इस से हिन्दुस्तानियो, तुम रहना होशियार ॥
भला वादे सब इनके झूँठे हैं।

होली नं० २

बाजी असहयोग की वीना।
अहमदावाद में गांधी जी ने छेड़े राग फिर तीना।
सत्याग्रह असहयोग स्वदेशी समझे सकल प्रवीना ॥ १ ॥

भारत की नर नारिन को फिर इसने मोहित कीना।
बहुत कीमती वस्त्र विदेशी डालि अगिन में दीना ॥ २ ॥
चर्खा अरु कर्घा को चलाओ जो चाहो स्वाधीना।
स्वराज्य को पैहौ तुम निश्चय रहो न पर आधीना ॥ ३ ॥
फाँसी चढ़कर गोली सहकर होगा विषका पीना।
बड़ी बड़ी फौजों के सन्मुख हम तानैंगे सीना ॥ ४ ॥
देश भक्तोंने गवर्मेन्ट की जेलन को भरदीना।
इससे गवर्नमेंट शाही के तन आयो बड़ा पसीना ॥ ५ ॥
सत्याग्रह में वे भर्ती हों जो हों धरम धुरीना।
अहिंसा व्रत से टरैं न कबहूँ चहे तन होवै छीना ॥ ६ ॥
पोर्ट आर्थर किलेपें जैसे जापानिन ने कीना।
वैसे ही जुट जाओ भारती जो तुम चाहो जीना ॥ ७ ॥
सत्याग्रह स्वराज्य की औषधि हैगी एक नवीना।
भारत के उद्धार करन हित प्रभुने अर्पण कीना ॥ ८ ॥
असहयोग में करो न भर्ती जो हों चरित विहीना।
कहैं विनोद यों गड़ बड़ होगी मन में रखो यकीना ॥ ९ ॥

अररररर कबीर।
खड़ो तक निज देश हित, बहुतक भई तयार।
माडरेट इनसे गये बीते, बैठे हिम्मत हार ॥
भला समझें स्वराज्य रस गुल्ला है।

होली नं० ३

छिड़ी है अब स्वराज्य की तान।
कलकत्ते की महा सभा में बैठे चतुर सुजान।
गाँधी जीने गाई रागिनी वैठि श्याम कल्यान ॥ १ ॥
यह अमृत की बर्षा बर्षी सभा सदों के कान।
लाला जी गाँधी से बोले फेरि सुनाओ आन ॥ २ ॥

दीपक में श्री गांधी जी ने गाया गीत महान।
असहयोग ध्रुपद के माने सब ने लीन्हे मान ॥ ३ ॥
अहमदाबाद की महा सभा ने देकर पूरा ध्यान।
असहयोग के पूर करन हित करन लगे सामान ॥ ४ ॥
छोटे बड़े लाट सब मिलकर की चातुरी महान।
गैर कानूनी स्वयं सेवक हैं यह कीन्हा एलान ॥ ५ ॥
पकड़ धकड़ को जारी करिके अपनी दिखाई शान।
मार कूट अरु गोली बमसे लीन्ही बहुतक जान ॥ ६ ॥
इधर गांधी दल भी आकर डटा आय मैदान।
दमन नीति अरु असहयोग संग होन लगी घमसान ॥ ७ ॥
सरकारी जेलें सब भरदी देश पै हो कुर्बान।
यह हालत लखि नौकर शाही बहुत भई हैरान ॥ ८ ॥
विदुर रूपधरि मालवि आये दोनों के दरम्यान।
कहैं विनोद न निर्णय होगा निश्चय लो तुम जान ॥ ९ ॥

अररररर कबीर।

चापलूसी से स्वराज न मिलता, तुम्हें देयँ समुझाय।
इसमें जो तुमको शक होवे, तारीखें पढ़ जाव॥
भला फिर झूठी ज़िद क्यों करते हो।

होली नं० ४

अब गांधी ने होली मचाई।

बरडोली में सत्याग्रह को सुन्दर बेलि लगाई।
असहयोग के जल को पाकर लहर लहर लहराई ॥१॥
भारतवर्ष में जो फैशन था उसको दियो बहाई।
खद्दर और सादगी सब कहिं सबको परै दिखाई ॥२॥
जैसे लछमन को सुखेण ने संजीवनी खिलाई।
खाते ही श्रीलछमन जैसे उठि बैठे हरखाई ॥३॥

भारत की नर नारिन को फिर इसने मोहित कीना।
बहुत कीमती वस्त्र विदेशी डालि अगिन में दीना ॥ २ ॥
चर्खा अरु कर्घा को चलाओ जो चाहो स्वाधीना।
स्वराज्य को पाओ तुम निश्चय रहो न पर आधीना ॥ ३ ॥
फाँसी चढ़कर गोली सहकर होगा विषका पीना।
बड़ी बड़ी फौजों के सन्मुख हम तानैंगे सीना ॥ ४ ॥
देश भक्तोंने गवर्मेंट की जेलन को भरदीना।
इससे गोरे शाही के तन आयो बड़ा पसीना ॥ ५ ॥
सत्याग्रह में वे भर्ती हों जो हों धरम धुरीना।
अहिंसा व्रत से टरें न कबहूँ चाहे तन होवै छीना ॥ ६ ॥
पोर्ट आर्थर किलेपै जैसे जापानिन ने कीना।
वैसे ही जुट जाओ भारती जो तुम चाहो जीना ॥ ७ ॥
सत्याग्रह स्वराज्य की औषधि हैगी एक नवीना।
भारत के उद्धार करन हित प्रभुने अर्पण कीना ॥ ८ ॥
असहयोग में करो न भर्ती जो हों चरित विहीना।
कहैं विनोद यों गड़बड़ होगी मन में रखो यकीना ॥ ९ ॥

अररररर कबीर।

रगड़ो तक निज देश हित, बहुतक भई तयार।
माडरेट इनसे गये बीते, बैठे हिम्मत हार ॥
भला समझैं स्वराज्य रस गुल्ला है।

होली नं० ३

छिड़ी है अब स्वराज्य की तान।
कलकत्ते की महा सभा में बैठे चतुर सुजान।
गाँधी जीने गाई रागिनी वैठि श्याम कल्यान ॥ १ ॥
यह अमृत की वर्षा बर्षी सभा सदों के कान।
लाला जी गाँधी से बोले फेरि सुनाओ आन ॥ २ ॥

दीपक में श्री गांधी जी ने गाया गीत महान।
असहयोग धुरपद के माने सब ने लीन्हे मान ॥ ३ ॥
अहमदाबाद की महा सभा ने देकर पूरा ध्यान।
असहयोग के पूर करन हित करन लगे सामान ॥ ४ ॥
छोटे बड़े लाट सब मिलकर की चातुरी महान।
गैर कानूनी स्वयं सेवक हैं यह कीन्हा एलान ॥ ५ ॥
पकड़ धकड़ को ज़ारी करिके अपनी दिखाई शान।
मार कूट अरु गोली बमसे लीन्ही बहुतक जान ॥ ६ ॥
इधर गांधी दल भी आकर डटा आय मैदान।
दमन नीति अरु असहयोग संग होन लगी घमसान ॥ ७ ॥
सरकारी जेलें सब भरदी देश पै हो कुर्बान।
यह हालत लखि नौकर शाही बहुत भई हैरान॥ ८ ॥
विदुर रूपधरि मालवि आये दोनों के दरम्यान।
कहैं विनोद न निर्णय होगा निश्चय लो तुम जान ॥ ९ ॥

अरररररर कबीर।

चापलूसी से स्वराज न मिलता, तुम्हें देयँ समुझाय।
इसमें जो तुमको शक होवे, तारीखें पढ़ जाव॥
भला फिर झूठी ज़िद क्यों करते हो।

होली नं० ४

अब गांधी ने होली मचाई।

बरडोली में सत्याग्रह की सुन्दर बेलि लगाई।
असहयोग के जल को पाकर लहर लहर लहराई॥१॥
भारतवर्ष में जो फैशन था उसको दियो बहाई।
खद्दर और सादगी सब कहिं सबको परै दिखाई॥२॥
जैसे लछमन को सुखेण ने संजीवनी खिलाई।
खाते ही श्रीलछमन जैसे उठि बैठे हरखाई॥३॥

ऐसे महात्मा ने भारत को बूटी दई पिलाई ।
तब यह मुर्दा से ज़िन्दा हो सबको परो लखाई ॥४॥
रीडिंग ने असहयोग दमन को हुकुम दियो गोहराई ।
गान्धी दल के जवाब ने तो उन्हें दियो शर्माई ॥५॥
लन्दन के पार्लियामेएट में दीन्हो दुन्द मचाई ।
गान्धी का दल बागी हैगा यहि का देव नशाई ॥६॥
ईश्वर के वह सच्चे भक्त हैं सुनलो कान लगाई ।
इसीलिये घट घट का व्यापक इनकी करै रखाई ॥७॥
कहैं विनोद वाट सत्याग्र होगी अति सुखदाई ।
इस परही यह भारत चलकर स्वराज्य को पा जाई ॥८॥

अररररर कबीर ।

सात लाख वेश्या भईं, अरु भईं बहुतक वेधर्म ।
तुम अब भी वेहोश पड़े हो, बनि पूरे वेशर्म ॥
भला मर्दुम शुमारि को पढ़ि देखो ।

होली नं० ५

अब तो उठो किसानो किसानो भाई ।
नज़राना वेगार आदि में देव न पैसा जाई ।
लगान क पैसा हो जो तुम पैं उसकी अदाई ॥ १ ॥
जो बातैं हम समुझावत हैं इन्हें न देव भुलाई ।
लूट पाट अरु मार तोड़ तो कवौं न देय दिखाई ॥ २ ॥
गाँवन में जो बदमशवा हों उनको देव समुझाई ।
उनके संग कबहूँ जो परि हो तो फिर जाब नशाई ॥ ३ ॥
गाँवन गाँवन में पञ्चायत जल्दी लेउ बनाई ।
न्याय धरम से करो फैसला आपस में हरखाई ॥ ४ ॥

अत्याचार के दुर करन को गाँधी दियो पठाई ।
असहयोग ही इसकी औषधि प्रभुने तुम्हें बताई ॥ ५ ॥
देशी शिक्षा वस्त्र आदि सब देव गाँवन फैलाई ।
कहै विनोद यहै गाँधी की आज्ञा है सुखदाई ॥ ६ ॥

होली ६

अब तो चेतो भारत भाई ।

लीद, मूत, कीचड़ का फेंकना नहीं उचित दिखलाई ।
यह सब काम कमीनन के है देय तुम्हें समुझाई ॥ १ ॥
पर नारी पर विटियन को लखि गाओ न गाली भाई ।
यह सब काम मूर्खों नेही सब कहिं दिये चलाई ॥ २ ॥
अब तो साठ बरस के डुकरा करते ब्याह सगाई ।
आप जाय मरघट में पहुँचे गड़ैं दई विठाई ॥ ३ ॥
छुटपन में लड़का लड़किन की करते ब्याह सगाई ।
वे बल बुद्धी से विहीन ह्वै भरते दुःख सदाई ॥ ४ ॥
निर्बल बीज के पौधे जैसे देवै पवन गिराई ।
औलादैं कमजोर बीज की त्यों मरती अधिकाई ॥ ५ ॥
तीन कोटि बेवा इसही से भारत देय दिखाई ।
बेवा सात लाख इनमें से बैठो चक्कला जाई ॥ ६ ॥
गर्भ गिराने की हत्या से चाहो जो बचिजाई ।
तो सज धज हो प्यारा जिनको देओ ब्याह कराई ॥ ७ ॥
शुभ लच्छन की जो विधवा हों उनकी करौ सहाई ।
ऐसे काम करन से तुमको होय पुराय अधिकाई ॥ ८ ॥
न्याय सहित जो निर्बल होवे उसकी करौ सहाई ।
अन्याई जो महा बली हो उसको देउ नसाई ॥ ९ ॥

भारत वर्ष यह सोय रहा था गहरी नींद में जाई ।
ऋषी दयानन्द ने यहँ आकर सबको दिया जगाई ॥ १० ॥
सावधान हो सकल भारती तज दो सकल बुराई ।
कहैं विनोद व्यवहार त्रिनौंने यहँ से के देउ बहाई ॥ ११ ॥

होली ७

अब तो छोड़ो मद का पीना ।

गाँजा भंग शराब चर्स अरु है अफीम में लीना ।
तन्दुरुस्ती चौपट हो पहिले फिर तन होवे छीना ॥ १ ॥
धन दौलत सब अपनि गँवा कर हो गये पर आधीना ।
मारे भूखन सब घर तलफैं मिलता नही चबेना ॥ २ ॥
मनुष योनि अति नीकि पायके ध्यान कबहुँ नहिं दीना ।
नशे खाय कर तुमने अब तो राक्षस पद को लीना ॥ ३ ॥
गान्धी जी ने तुम को अब तो दीन्हा ज्ञान नगीना ।
हिन्दुस्तानी नशा न पीवैं चहैं जो सुख से जीना ॥ ४ ॥
सोने कि लंक इसीसे नसि गई रवन भये मति हीना ।
सब परिवार नशा कर अपनो भये यम के आधीना ॥ ५ ॥
* ऐयाशी में तुमने अपनो सब धन अर्पन कीना ।
ऐसे कामन से नसि जैहो कहते सकल प्रवीना ॥ ६ ॥
इससे भारत वासी अब तो हो जावो दोष विहीना ।
कहैं विनोद सुनो सब भाई अब तुम नशा न पीना ॥ ७ ॥

अररररर कबीर ।

खद्दर पहिरो चरखा कातौ, कसब को देउ हटाय ।
तुम्हरे लिये गांधी जी ने, दियो यही बतराय ॥

भला यह हुकुम महात्मा गांधी का ।

---

*सात लाख वेश्याओं की आमदनी ६२ करोड़ है ४५००००००

होली ८

देश पर हो जावो कुर्बान।

सरकारी नौकर अरु फ़ौजो रखो देश का मान।
अपने देश की रक्षा के हित अर्पण करदो प्रान ॥ १ ॥
भारत के व्यापारी मिल कर करें स्वार्थ का दान।
जिससे हरा भरा भारत हो योग्य हो बागान ॥ २ ॥
माल विदेशी के ही कारण धन का मिटा निशान।
सब मिलि जब तुम प्रतिज्ञा करिहो तब हों सुख सामान ॥ ३ ॥
ईसाई, अरु, आर्य मुसलमां एका करो महान।
मतवाली नौकरशाही तो होगी अति हैरान ॥ ४ ॥
परमेश्वर की सृष्टि जान कर करौ सबन का मान।
छुआ छूत का त्यागन करना गांधी का फरमान ॥ ५ ॥
अबलन पर पंजाब प्रान्त को हो अन्याय महान।
ऐसी हालत में मरना तो होगा स्वर्ग समान ॥ ६ ॥
चर्खे अरु कर्घे से रक्खो अपने देश की शान।
कोटि पचहत्तर इससे बचिहैं सुन लो चतुर सुजान ॥ ७ ॥

अररररर कबीर।

पीर मदारन अरु भुइन को, दुनिया पूजै धाय।
जो प्रभु घट घट का व्यापक है, ताहि दियो बिसराय ॥
भला इसही से दुनिया दुखी भई।

करोड़ तमाखू शिगरट और भंग, अफीम, गाँजा, चर्स, शराब यह भी इतनी खर्च होती है। एक अरब व साठ करोड़राब, देश का धन व्यर्थ जाता है।

होली नं० ६

अब तो छोड़ो आस पराई ।

जिसने भोजन दिया गर्भ में वह सब करै सहाई ।
वही ईश्वर भोजन देगा संशय नहीं है भाई ॥ अब० १ ॥
इसी अर्धनी नेहीं है तुमको बेड़ी है पहिराई ।
अच्छी बात नीकि ना लागे उलटी परै दिखाई ॥ अब० २ ॥
गाँधी का उपदेश बीज यह धरती गया समाई ।
इसमें से शाख फूटैंगी भारत देय जिलाई ॥ अब० ३ ॥
एक तरफ नौकर शाही दल देय महान दिखाई ।
दुसरी तरफ कृष्ण सम गाँधी सबको परै दिखाई ॥ अब० ४ ॥
न्याय हीन कौरव की सेना जैसे गई नसाई ।
वैसे ही अन्यायी शासन जैहै तुम से पराई ॥ अब० ५ ॥
दे सुबुद्धि जगदीश बृटिस को देय स्वराज्य दिलाई ।
नाहीं तो फिर असहयोग का झगड़ा यहँ फहराइ ॥ अब० ६ ॥
मार काट अरु खून खराबी कोई ना करियो भाई ।
कहै विनोद सबै मिलि मानहु यह शिक्षा सुखदाई ॥ अब० ७ ॥

अररररर कबीर ।

पहिले के ब्राह्मण हते, करैं बेद शास्त्र उपदेश ।
अब के ब्राह्मण गाली गावैं, बने फिरैं बेवफूफ ॥
भला इनका मुँह देखै सो पापी ।

होली नं० १०

अब तो तजो मांस का खाना ।

हिन्दू अरु ईसाई मुसलमाँ जो होवो तुम दाना ।
उठायदो पूरी दुनियाँ से सारे कसाई खाना ॥ अब० १ ॥

दही दूध की दीजी मशी नै तुमको श्रीभगवाना।
इनका जो तुम नास करो तो नाहीं हो हंसाना ॥ अब० २॥
इस पर जो तुम ध्यान न देहो होगा दुःख उठाना।
फिर दूध मलाई घी आदिक होइजैहैं इत्रसमाना ॥ अब० ३॥
सौ रूपया पर सौ रुपया जब देना पड़ी लगाना।
एकहज़ार की गोई मिली जब तब हों होश ठिकाना ॥ अब० ४॥
अकाल और बीमारिन में पशु होवेंगे वे जाना।
माथ पकरि तब रोओगे तुम सच्चा किया बयाना ॥ अब० ५॥
म्यूनिसिपालिटी डेरीफारम प्रभु ने रचे महाना।
इनको नशा कर तुम सब जैहो दोज़ख के दर्म्याना ॥ अब० ६॥
फिर्दौसी के शह नामें में लिक्खा यही दिखाना।
अण्डा मांस आदि का भोजन है शैतानी खाना ॥ अब० ७॥
हिन्दुन को अपने मुर्दों को नंगा होगा जलाना।
मुसलमान ईसाई मुर्दे नंगे हों दफनाना ॥ अब० ८॥
राजा जिमींदार सब खोलिहैं खेतिन के कारखाना।
तबहीं खेत निकल सब जैहैं सुनलो सकल किसाना ॥ अब० ९॥
पिरथी पर जब ढोर न रहि हैं मिलें न तुमको दाना।
कहै विनोद हाथ तब तुमरे रहिहै हाड़ चबाना ॥ अब० १०॥

अररररर कबीर।

नारी पूजा होत जहँ, करत देवता वास।
जहाँ अनादर इनका होवे, वहँ का होय विनाश॥
भला जूती फिर कहना अनुचित है।

होली नं० ११

ठनेगी सत्याग्रह की ठान।
गोरी शाही से ना मिलहै तुमको एक छदाम।
हमने तुमको बतला दीन्हा सच्चा यह अनुमान॥ ठनेगी० १॥

कौरव पाण्डव दोऊ दल में मालवि विदुर समान।
दुर्योधन सम गवर्नमेन्ट से ब्रिटिश होय अपमान॥ ठने० २॥
इससे मालवि दल में होगी हल चल बड़ी महान।
यह हालत जब देश में होगी तब होगा उत्थान। ठने० ३॥
गाँधी जब गुजरात देश में करिहैं बन्द लगान।
निश्चय कैद किये जायेगे सूरत के दर्शान॥ ठने० ४॥
फिर तो काम होयगा दूना सुनलो चतुर सुजान।
गीदड़ सब बिलमें घुसि जैहैं सिंह दहड़िहैं आन॥ ठने० ५॥
हिन्सा कहूँ न होने पावे रखना यह तब ध्यान।
अपना काम करे सब जाना भूल न होय निदान॥ ठने० ६॥
चर्खा कर्घा खूब चला कर रखना देश का मान।
यहै गाधी देंगे तुमको अपना तब फर्मान॥ ठने० ७॥
सरकारी नौकर अरु फौजी होगे वहु कुर्बान।
नौकरशाही तबहीली है साथ ववाई आन॥ ठने० ८॥
केवल सत्याग्रह से मिलिहै स्वराज का अस्थान।
कहैं विनोद देश वासी अबदो सत्याग्रह मान॥ ठने० ९॥
कहैं विनोद कड़ा हिम्मत कर यह धरलो उर ध्यान।
धर्म अहिंसा यह स्वभाव क्या है गा अंगप्रधान। ठने० १०॥

अररररर कबीर।

रामायण के लंकाकाण्ड में, लिक्खा पढ़ लेव जाय।
ब्राह्मण से राक्षस बना, मद्य मांस को खाय।
भला यह रामायण में पढ़ देखो।

होली १२॥

मची है भारत में घमसान।
गन मशीन बन्दूक तोप अरु लै फौजी सामान।
नौकर शाही के संग रीडिंग आय डटे मैदान॥ १॥

इधर महात्मा गांधी ने भी लिया चक्र अब तान।
असहयोग का शंख बजाकर छेड़ दिया संग्राम ॥ २ ॥
मार कूट अरु गोलि आदि से चोटें करें महान।
अपनी निहत्थी प्रजा के ऊपर त्रिटश दिखाती शान ॥ ३ ॥
फिर गांधी दल ने भी छोड़ी चरखा तोप महान।
लंकाशायर मनचेस्टर तो जिससे भये वीरान ॥ ४ ॥
यह हालत भारत की लखि के गोरे भये हैरान।
कहैं सवेरे या प्रभु ईशा कैसे बचि हैं प्रान ॥ ५ ॥
कहैं विनोद देश पर सब मिलि हो जाओ कुर्बान।
पहिले इससे स्वराज्य मिलि है फिर हो नाम जहान ॥ ६ ॥

होली १३ ॥

उठो अब भारत की सन्तान।

पहिले यहाँ के सकल विप्रगण करते श्रुति गान।
अब तो गाली बकते फिरते तज करके कुल कान ॥ १ ॥
राजागण यहँ पर ऐसे थे करते प्रजा का मान।
अब तो प्रजा का नाश कराकर चहते हैं कल्यान ॥ २ ॥
कृषि गोरक्षा वणिज आदि में थे बनिये विद्वान।
अब तो ब्याज दलाली में ही समझैं अपनी शान ॥ ३ ॥
फिर शूद्र आदि जातिन में बहुतक होते थे गुण वान।
अब तो वह भी बिलकुल बिगरे कर कर मदिरा पान ॥ ४ ॥
कच्चा माल देश में राखो जो चाहो निजमान।
चर्खा पची चले देश में तब होगा उत्थान ॥ ५ ॥
असहयोग की ढाल बना कर डटो आय मैदान।
आध्यात्मिक शक्ती तव लखकर होगा चकित जहान ॥ ६ ॥
भारतवर्ष कला कौशल में था पूरा मतिमान।
अब तो काला काफ़िर कहते सुनो सकल दे कान ॥ ७ ॥

ब्रारा, गामा, रामसूर्ती हैं परसिद्ध जहान।
पूरुप के सैंडो आदिक का किया चूर अभिमान ॥ ८ ॥
प्रथम यहाँ पर भीम भीष्म से होते थे बल वान।
ब्रह्मचर्य हो पालन उनका सच्चा है परमान ॥ ६ ॥
पच्छिम दुनियाँ चली जात थी तज्ञ कर अपना ज्ञान।
अब उसको पूरब लावेंगे गान्धी से विद्वान ॥ १० ॥
भारत वर्ष हुआ अति जर्जर सूखा उसका प्रान।
शिबि दधीच सम दानी बनकर करो आत्म बलिदान ॥ ११ ॥
कहैं विनोद अत्याचारों से पीड़ित हुआ महान।
उठो शीघ्रही भारत वीरो रखो देश का मान ॥ १२ ॥

होली नं० १४ ॥

सकल मिलि होली ऐसी मचाओ।
पर नारी पर विटियन को लखि कमीन गाली गाओ।
यह सब काम कमीनन के हैं समझो अरु समझाओ ॥
हर सिंघार, तुन, कुसुम अरु टेसू सब मिलि दही घुराओ।
भरि पिचकारी हारिहारिन की टोली पर बरसाओ।
गुलाल अँबीर अरु रंग विदेशी कोई ना मोल मँगाओ।
कपूर केसर चन्दन घिस कर सबके माथ लगाओ ॥
हिन्दू आर्य्य मुसल्मां सब मिलि प्रेम भाव दर्शाओ।
द्वेष, ईर्षा, जलन दूरि कर एक दिल अब हो जाओ ॥
झगड़े का अब समय नहीं है मन यह सब लाओ।
सब मिलि देश सुधारन के हित शक्ती खूब लगाओ ॥
देशी शिक्षा वस्त्र आदि सब अपने देश फैलाओ।
निश्चय जीत होयगी तुम्हरी इसमें झूँठ न पाओ ॥
कहै विनोद सुनो सब भाई अब ना देर लगाओ।
यह उपदेश रखो जब चित में तब स्वराज्य पा जाओ ॥

करो सब मिलि अछूत उद्धार।

भंगी, पासी, धानुक, कोरी, धोबी खटिक चमार।
भारत के दश कोटि पुत्र हैं इनको करौ पियार॥ १ ॥
छुआ छूत के इस झगड़े को यहँ से देव निकार।
वारिउ वरण प्रेम से बैठो देओ घृणा विसार॥ २ ॥
राम जपैं अरु चोटी रक्खें तब देते दुत्कार।
वही विधर्मी जब हो जावे तब करते सत्कार॥ ३ ॥
सुप सुहाग कलफ़ कपड़े का करते सब व्योहार।
इनके धोखे में छूने से करते क्रोध अपार॥ ४ ॥
परमेश्वर के इन पुत्रन सों करो न नफ़रत यार।
छुआ छूत की गठरी को तुम दो होली में डार॥ ५ ॥
ऐसे अनाड़ी पन को तज कर मनमें करो विचार।
करौ नाश इस उलटी मति का ज्ञान अगिन में डार॥ ६ ॥
विजय भोज में भयो अपमानित सलावदी सर्दार।
इसके कारण रानासाँगा गये बाबर से हार॥ ७ ॥
जाति अछूतन की उन्नति को लेवो सब मिलि धार।
कहै विनोद बेड़ा स्वराज्य का होगा इससे पार॥ ८ ॥

अररररर कबीर।

नौकर शाही से युद्ध करन हित, गाँधी भये तयार।
भारत वासी अब संग देवहु, हो जाय बेड़ा पार॥

भला बम असहयोग का गोला है।

होली नं० १५ ॥

सदा अनन्द रहै यह भारत सब मिलि खेलैं होली हो।
नारिन को लखि गाली देना यही कमीनी बोली हो॥

हर सिंगार तुन कुसुम अरु टेसू सब मिलि लेओ घोली हो
भरि पिचकारिन रंग रमाओ होरिहारन के टोली हो ॥
अँबीर गुलाल, रंग रू बे विदेशी कोइ ना लेओ मोली हो।
इससे तुम्हरे देश का पैसा जाय विदेशिन ओली हो॥
बातें कह कर फूहर गन्दी कोइ ना करो ठठोली हो।
मीठी और रसीली प्यारा साची बोलो बोली हो।
नौकर शाही की होली पर तंग हो गई चोली हो।
छुआ छूत का भूत हटा कर मिलो सबन दिल खोली हो।
प्रेम गुलाल एका अँबीर का भर भर डालो झोली हो।
दमन नीति से नेक न डरना इसकी जड़ है पोली हो।
सबके मुहँ पर कपूर केसर चन्दन डालो घोली हो।
विनोद तुमको समझाते हैं सत्य तुला पर तोली हो॥

अररररर कबीर।

जैसे दूब काटने पर तो, लहर लहर लहराय।
तैसे ही असहयोग दमन से, दूना परी दिखाय॥

भला भारत की विजय अवशि होगी।

---

* गुलाल और अँबीर में विदेशी रँग पड़ता है। इस लिये इन को मोल लेने से देश का पैसा बाहर चला जाता है।
* जो इन्हें लेने में असमर्थ हों वे टेसू काम में लावें।
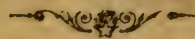
पुस्तक मिलने का पताः—

हिन्दी पुस्तक भंडार
२५, श्रीराम रोड, लखनऊ।

हिन्दी पुस्तक भंडार

२५, श्री रामरोड लखनऊ ।

की

प्रकाशित पुस्तकें

——:o:——

ऊपर का सिर्फ टाइटिल (कवर) पेज कृष्ण प्रेस, प्रयाग में छपा ।